



निर्यातित उत्पादों पर शुल्कों और करों में छूट की योजना (रोडटेप)

सन्दर्भ: सरकार ने निर्यातित उत्पादों पर शुल्क और करों में छूट की योजना (RoDTEP) के लिए अपना समर्थन 30 जून, 2024 तक बढ़ाने का निर्णय लिया है।

- RoDTEP समर्थन, जो मूल रूप से 30 सितंबर, 2023 को समाप्त होने वाला था, मौजूदा निर्यात वस्तुओं के लिए दरों में कोई बदलाव नहीं होने के साथ, 30 जून, 2024 तक बढ़ा दिया गया है।
- इस विस्तार का उद्देश्य निर्यातकों को बेहतर अंतरराष्ट्रीय अनुबंधों को प्राप्त करने में सहायता करना है और यह एंड-टू-एंड आईटी प्रणाली का उपयोग करते हुए WTO दिशानिर्देशों के अनुकूल है।
- राजस्व विभाग का हिस्सा, RoDTEP समिति को RoDTEP योजना के तहत विभिन्न निर्यात क्षेत्रों के लिए अधिकतम दरों की समीक्षा और सिफारिश करने के लिए पुनर्गठित किया गया है।
- निर्यात संवर्धन परिषदों और वाणिज्य मंडलों ने सभी निर्यात वस्तुओं के लिए बाजार पहुंच बढ़ाने के लिए बढ़े हुए बजट आवंटन और उच्च दरों की आवश्यकता पर जोर दिया है।
- 1 जनवरी, 2021 को शुरू की गई RoDTEP योजना, निर्यातित उत्पादों के निर्माण और वितरण के दौरान किए गए करों, कर्तव्यों और लेवी की प्रतिपूर्ति प्रदान करती है, जो अन्य तंत्रों के माध्यम से वापस नहीं की जा सकती।

RoDTEP

उद्देश्य:

- निर्यात को बढ़ावा देना।
- वैश्विक बाजारों में घरेलू उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाना।
- विकास के लिए निर्यात-केंद्रित उद्योगों में सुधार करना।
- रोजगार के अवसर सृजित करना।
- भारत की आत्मनिर्भरता (आत्मनिर्भर भारत) के दृष्टिकोण में योगदान देना।

RoDTEP के बारे में:

- RoDTEP का, निर्यात उत्पादों पर शुल्कों और करों की छूट के लिए संक्षिप्त रूप से, MEIS योजना की जगह, 1 जनवरी, 2021 से कार्यान्वयन शुरू हुआ।
- RoDTEP विश्व स्तर पर स्वीकृत सिद्धांत पर आधारित है कि करों और शुल्कों का निर्यात नहीं किया जाना चाहिए। इसके बजाय, निर्यातित उत्पादों पर लगने वाले करों और लेवी में या तो छूट दी जानी चाहिए या निर्यातकों को वापस किया जाना चाहिए।
- यह योजना अंतर्निहित केंद्रीय, राज्य और स्थानीय शुल्कों/करों की वापसी करती है जो पहले निर्यातकों को छूट/वापसी नहीं दी गई थी।
- व्यापक आईटी ढांचे के भीतर केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) द्वारा हस्तांतरणीय इलेक्ट्रॉनिक स्क्रिप के रूप में छूट प्रदान की जाती है।
- डिजिटलीकरण आईटी-आधारित जोखिम प्रबंधन प्रणाली के माध्यम से निर्यातक रिकॉर्ड के त्वरित और सटीक सत्यापन की सुविधा प्रदान करता है, जिससे कुशल लेनदेन प्रसंस्करण सुनिश्चित होता है।
- ICEGATE पोर्टल (भारतीय सीमा शुल्क इलेक्ट्रॉनिक गेटवे) निर्यातक क्रेडिट विवरण रखता है।

ड्यूटी क्रेडिट स्क्रिप्ट (Duty Credit Scrips)

- ड्यूटी क्रेडिट स्क्रिप्ट (डीसीएस) भारत की विदेश व्यापार नीति (एफटीपी) 2015-20 के तहत एक निर्यात प्रोत्साहन लाभ है, जिसका उद्देश्य निर्यातकों को प्रोत्साहित करना और विदेशी मुद्रा प्रवाह को बढ़ावा देना है।
- डीसीएस निर्यात पर कर प्रोत्साहन प्रदान करता है और इसका उपयोग आयात शुल्क की भरपाई के लिए किया जा सकता है। यह MEIS, SEIS और एक्सपोर्ट कैपिटल गुड्स स्कीम के तहत जारी किया जाता है।
- विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) के सहयोग से भारत के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित, एफटीपी 2015-20 डीसीएस सुविधाओं और प्रावधानों की रूपरेखा तैयार करता है।

ड्यूटी क्रेडिट स्क्रिप्ट (डीसीएस) के उपयोग:

- सीमा शुल्क, अतिरिक्त सीमा शुल्क, सुरक्षा शुल्क, संक्रमणकालीन विशिष्ट सुरक्षा शुल्क और एंटी-डंपिंग शुल्क सहित अन्य देनदारियां समयोजित करना।
- दूसरों को उनकी कर देनदारियों के लिए डीसीएस हस्तांतरित करना।
- जीएसटी, मुआवजा उपकर और शिक्षा उपकर के लिए लागू नहीं है।
- डीसीएस की वैधता जारी होने की तारीख से 24 महीने तक है।
- डीसीएस को अत्यावश्यक परिस्थितियों में डीजीएफटी द्वारा पुनः मान्य किया जा सकता है।

राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग

सन्दर्भ: राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग ने वर्ष 2020-21 और 2021-22 के लिए अपनी वार्षिक रिपोर्ट भारत के राष्ट्रपति को प्रस्तुत की है।

- संविधान के अनुच्छेद 338 के अनुसार अनुसूचित जाति के लिए राष्ट्रीय आयोग, अनुसूचित जाति के लिए संवैधानिक सुरक्षा उपायों की स्थिति पर राष्ट्रपति को वार्षिक रिपोर्ट देता है।
- इसमें इन सुरक्षा उपायों के प्रभावी कार्यान्वयन और अनुसूचित जातियों के सामाजिक-आर्थिक विकास को सुनिश्चित करने के लिए संघ और राज्यों द्वारा कार्यवाई की सिफारिशें शामिल हैं।
- इन रिपोर्टों में भारतीय संविधान में निर्धारित अनुसूचित जातियों के लिए संवैधानिक सुरक्षा उपायों की सुरक्षा को संबोधित करने वाली सिफारिशें शामिल हैं।

NCSC के गठन का विकास

- प्रारंभ में, भारत के संविधान ने अनुच्छेद 338 के तहत एक विशेष अधिकारी की स्थापना की, जिसे अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति आयुक्त के रूप में जाना जाता था।
- 1987 में संसदीय दबाव के जवाब में, सरकार ने अनुसूचित जाति (एससी) और अनुसूचित जनजाति (एसटी) के कल्याण के लिए एक सदस्यीय आयोग को बहु-सदस्यीय आयोग से बदलने का फैसला किया।
- 1990 में संविधान में 65वां संशोधन, अधिनियम ने अनुच्छेद 338 में संशोधन किया, जिससे अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के अलावा 5 सदस्यों के साथ अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए राष्ट्रीय आयोग बनाया गया।
- इसके बाद, 2003 में 89 वें संशोधन के कारण निम्नलिखित अलग-अलग संस्थाओं की स्थापना हुई:
 - राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग
 - राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग

Face to Face Centres





- अनुसूचित जाति के लिए पहला राष्ट्रीय आयोग 2004 में बनाया गया था, जिसके अध्यक्ष सूरजभान थे।

NCSC

- राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग (एनसीएससी) की स्थापना भारतीय संविधान के अनुच्छेद 338 के तहत एससी एसटी (पीओए) अधिनियम 1989 और पीसीआर अधिनियम 1955 सहित विभिन्न अधिनियमों को पूरी तरह से लागू करने की प्रतिबद्धता के साथ की गई थी।
- 1937 की जनगणना के बाद कुछ जातियों को 'दलित वर्ग' के रूप में मान्यता दी गई, जिससे इन समुदायों को होने वाले सामाजिक नुकसान को स्वीकार किया गया। अनुच्छेद 341(1) के तहत सूचीबद्ध जातियों या जनजातियों को अनुसूचित जाति कहा जाता है।

राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग की संरचना:

- अध्यक्ष
- उपाध्यक्ष
- तीन अन्य सदस्य
- सभी सदस्यों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है, अध्यक्ष को कैबिनेट मंत्री का दर्जा प्राप्त होता है और उपाध्यक्ष को राज्य मंत्री के समान दर्जा प्राप्त होता है।

राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के पास निहित शक्तियाँ:

- एनसीएससी अपनी प्रक्रियाओं को विनियमित कर सकता है।
- यह व्यक्तियों को पूछताछ के लिए बुला सकता है।
- आयोग शपथ पत्र के माध्यम से साक्ष्य प्राप्त कर सकता है।
- इसके पास गवाहों की जांच के लिए एक कमीशन जारी करने का अधिकार है।
- एनसीएससी दस्तावेजों को प्रस्तुत करने के लिए बाध्य कर सकता है और उसके पास सिविल न्यायालय की शक्तियाँ भी हैं।

राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के कार्य:

- एनसीएससी संविधान में निर्धारित अनुसूचित जातियों के लिए सभी सुरक्षा प्रावधानों की जांच और निगरानी करता है।
- यह अनुसूचित जातियों के सुरक्षा उपायों और अधिकारों से वंचित होने से संबंधित शिकायतों का निवारण करता है।
- इन सुरक्षा उपायों के कार्यान्वयन पर नियमित रूप से राष्ट्रपति को रिपोर्ट करता है।
- अनुसूचित जातियों के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए योजनाओं की सिफारिश करता है और उनके कल्याण, सुरक्षा और उन्नति के लिए उपाय सुझाता है।
- 2018 तक, एनसीएससी अन्य पिछड़े वर्गों (ओबीसी) के लिए भी समान कार्य करता था, लेकिन 2018 के 102 वें संशोधन अधिनियम द्वारा अन्य पिछड़े वर्गों (ओबीसी) के लिए भी एक अलग राष्ट्रीय आयोग गठित कर दिया गया है।
- एनसीएससी एंग्लो-इंडियन समुदाय के लिए भी समान कार्य करता है।
- आयोग नागरिक अधिकार अधिनियम और अत्याचार अधिनियम के कार्यान्वयन की निगरानी करने, उनके निपटान दरों की निगरानी करने और अत्याचारों की शिकायतों की मौके पर ही जांच करने के लिए विशेष अदालतें स्थापित करता है।

CE20 E13 इंजन

सन्दर्भ: इसरो के CE20 उन्नत इंजन ने हॉट टेस्ट एवं गगनयान योग्यता परीक्षण में 22-टन थ्रस्ट योग्यता हासिल करते हुए सफलता प्राप्त कर ली है।

- एलपीएससी वलियामाला (LPSC Valiamala) द्वारा CE 20 इंजन का 22 सितंबर, 2023 को आईपीआरसी महेंद्रगिरि में परीक्षण किया गया।
- यह LVM3 के C25 के लिए क्रायोजेनिक अपर स्टेज (CUS) को शक्ति प्रदान करता है।
- इससे चंद्रयान मिशन और वनवेब लॉन्च सहित 19-टन थ्रस्ट एलवीएम 3 मिशनों में विश्वसनीयता साबित हुई।
- इसे उच्च पेलोड क्षमता के लिए अपग्रेड किया गया और अब यह 22-टन थ्रस्ट के साथ C32 बन गया। यह ध्यान देने योग्य है कि, गगनयान मिशन की तैयारी के लिए ग्राउंड हॉट परीक्षणों की श्रृंखला आयोजित की गई थी।
- सबसे पहले E13 HT-01 ने इंजन ट्यूनिंग शुरू की और इसका 50 सेकंड का परीक्षण हुआ।
- E13 HT-02, 30 अगस्त, 2023 को 720 सेकंड का एक यह परीक्षण, ओनी सटीक विश्वसनीयता प्रदर्शित करता है।
- 22 सितंबर, 2023 को आईपीआरसी, महेंद्रगिरि में ई13 एचटी-03 ने गगनयान के लिए 22 टन की थ्रस्ट क्षमता की पुष्टि की।
- इस प्रकार सफल E13 HT-03 गगनयान और भविष्य के मिशनों के लिए तैयारी का प्रतीक है।

गगनयान मिशन

- गगनयान इसरो का एक मिशन है जिसमें तीन उड़ानें शामिल हैं।
- कार्यक्रम में दो मानव रहित उड़ानें और एक मानव अंतरिक्ष उड़ान शामिल है।
- गगनयान प्रणाली का हिस्सा ऑर्बिटल मॉड्यूल में एक महिला सहित तीन भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को ले जाएगा।
- यह 5-7 दिनों तक 300-400 किमी की ऊंचाई पर पृथ्वी की परिक्रमा करेगा।

पेलोड:

- पेलोड में मनुष्यों को ले जाने के लिए एक क्रू मॉड्यूल शामिल है।
- आपातकालीन पलायन और मिशन समाप्ति क्षमताओं के साथ दो तरल प्रणोदक इंजनों द्वारा संचालित एक सेवा मॉड्यूल भी है।

प्रक्षेपण यान:

- जीएसएलवी एमके III, जिसे एलवीएम-3 (लॉन्च व्हीकल मार्क-3) के नाम से भी जाना जाता है, अपनी पर्याप्त पेलोड क्षमता के कारण गगनयान लॉन्च करेगा।

Face to Face Centres





रूस में प्रशिक्षण:

- इसरो के मानव अंतरिक्ष उड़ान केंद्र और रूस के ग्लावकोस्मोस ने जून 2019 में एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए हैं।
- इस प्रशिक्षण में उम्मीदवार का चयन, चिकित्सा परीक्षा और अंतरिक्ष प्रशिक्षण शामिल है।
- उम्मीदवार सोयुज अंतरिक्ष यान प्रणालियों का अध्ययन करेंगे और आईएल-76 एमडीके विमान पर अल्पकालिक भारहीनता का अनुभव करेंगे।
- सोयुज लोगों को अंतरिक्ष स्टेशनों तक/वहां से लाने और ले जाने के लिए एक रूसी अंतरिक्ष यान है।
- II-76MDK एक सैन्य परिवहन विमान है जिसे अंतरिक्ष यात्री प्रशिक्षण के लिए परवलयिक उड़ानों के लिए डिज़ाइन किया गया है।

क्रायोजेनिक इंजन:

- क्रायोजेनिक रॉकेट इंजन ईंधन और ऑक्सीडाइज़र दोनों के रूप में तरलीकृत गैसों का उपयोग करते हैं, जो बेहद कम तापमान पर संग्रहीत होते हैं, जो उच्च दक्षता प्रदान करते हैं।
- इन इंजनों ने सैटर्न वी रॉकेट के माध्यम से नासा की चंद्रमा लैंडिंग की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और पहली बार यूएस एटलस-सेंटौर (US Atlas-Centaur) पर इसका उपयोग किया गया था।
- क्रायोजेनिक इंजन आज भी उच्च प्रदर्शन वाले ऊपरी चरणों और बूस्टर में उपयोग किए जाते हैं।
- ऑपरेशनल क्रायोजेनिक रॉकेट इंजन संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, जापान, भारत, फ्रांस और चीन सहित देशों के रॉकेटों में पाए जाते हैं।

क्रायोजेनिक प्रणोदक:

- रॉकेट इंजनों को थ्रस्ट के लिए ईंधन और ऑक्सीडाइज़र की उच्च द्रव्यमान प्रवाह दर की आवश्यकता होती है।
- प्रणोदकों को दबावयुक्त गैसों के रूप में संग्रहीत करने के लिए बड़े, भारी टैंकों की आवश्यकता होती है।
- क्रायोजेनिक तापमान प्रणोदकों को उच्च घनत्व और कम दबाव पर तरल चरण में मौजूद रहने की अनुमति देता है, जिससे भंडारण आसान हो जाता है।
- क्रायोजेनिक तापमान के उदाहरणों में -183°C से नीचे तरल ऑक्सीजन और -253°C से नीचे तरल हाइड्रोजन शामिल हैं।
- क्रायोजेनिक रॉकेट इंजन हमेशा तरल-प्रणोदक इंजन होते हैं।

सामान्य ईंधन-ऑक्सीडाइज़र संयोजन:

- तरल हाइड्रोजन (LH2) और तरल ऑक्सीजन (LOX) का उपयोग आमतौर पर उपलब्धता और उच्च एन्थैल्पी रिलीज के कारण किया जाता है।
- यह संयोजन 4.4 किलोमीटर प्रति सेकंड (2.7 मील/सेकंड; मैक 13) के प्रभावी निकास वेग पर 450 सेकंड तक का विशिष्ट आवेग उत्पन्न कर सकता है।

मुख्य घटक और दहन चक्र:

- क्रायोजेनिक रॉकेट इंजन के प्रमुख घटकों में दहन कक्ष, पायरोटेक्निक आरंभकर्ता, ईंधन इंजेक्टर, ईंधन और ऑक्सीडाइज़र टर्बोपंप, क्रायो वाल्व, नियामक, ईंधन टैंक और रॉकेट इंजन नोजल शामिल हैं।
- क्रायोजेनिक इंजन मुख्य रूप से पंप-फेड होते हैं और गैस-जनरेटर चक्र, चरण-दहन चक्र या विस्तारक चक्र में संचालित होते हैं।
- गैस-जनरेटर इंजन का उपयोग बूस्टर पर किया जाता है, स्टेज-दहन इंजन दोनों भूमिका निभा सकते हैं लेकिन अधिक जटिल होते हैं, और विस्तारक इंजन अपने कम जोर के कारण ऊपरी चरणों के लिए विशिष्ट होते हैं।

NEWS IN BETWEEN THE LINES

असोला भट्टी वन्यजीव अभ्यारण्य



हाल ही में, भारतीय वन्यजीव संस्थान (WII), देहरादून, ने असोला भट्टी वन्यजीव अभ्यारण्य (Asola Bhatti Sanctuary) की जैव विविधता पर एक अध्ययन करने का प्रस्ताव दिया है।

अवस्थिति: असोला भट्टी अभ्यारण्य राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में अरावली पर्वतमाला के उत्तरपूर्वी भाग में स्थित है।

भौगोलिक वर्गीकरण: इसे उष्णकटिबंधीय रेगिस्तानी कांटेदार जंगल के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

आकार: यह अभ्यारण्य दिल्ली रिज के दक्षिणपूर्वी हिस्से में 32.71 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र को कवर करता है।

जीव-जंतु: यह अभ्यारण्य विभिन्न प्रकार के वन्यजीवों का घर है, जिनमें सांभर, चित्तीदार हिरण, हाँग हिरण, नीलगाय, काला हिरण, भारतीय सूअर, तेंदुए, धारीदार लकड़बग्घे और रीसस मकाक सहित अन्य जानवर शामिल हैं।

वन्यजीव गलियारा: असोला भट्टी वन्यजीव अभ्यारण्य सरिस्का-दिल्ली वन्यजीव गलियारे का हिस्सा है, जो विभिन्न क्षेत्रों के बीच वन्यजीवों की आवाजाही की सुविधा प्रदान करता है।

मानव निर्मित झील: इस अभ्यारण्य में नीली झील, एक मानव निर्मित झील है जो इसके मुख्य आकर्षणों में से एक है।

कैमरा-ट्रैप अध्ययन: कैमरा ट्रैप पर आधारित पिछले अध्ययन में अभ्यारण्य में आठ तेंदुओं और दो से चार धारीदार लकड़बग्घों की मौजूदगी की सूचना दी गई थी।

बालसम पौधा (Balsam Plant)



बालसम पौधा: बालसम पौधा इम्पेटिनस जीनस (genus *Impatiens*) से संबंधित है, जो अपने जीवंत और आकर्षक फूलों के लिए जाना जाता है।

स्थानीय नाम: केरल के मुन्नार (Munnar) में, इसे स्थानीय रूप से कासियुम्बा या ओनाप्पोवु के नाम से जाना जाता है।

'टच-मी-नॉट' विशेषता: बालसमपौधे को अक्सर 'टच-मी-नॉट' कहा जाता है, क्योंकि छूने पर इसके परिपक्व बीज फूट जाते हैं जो इसकी अनूठी विशेषता है, जिससे बीज वितरण में आसानी होती है।

आवास और जीवन चक्र: बालसम पौधे का जीवन चक्र प्रायः जून से दिसंबर तक होता है।

यह सामान्यतः जंगली इलाकों में इलाकों में पनपता है।

जलवायु परिवर्तन संकेतक: बालसम पौधे को जलवायु परिवर्तन के लिए एक महत्वपूर्ण संकेतक प्रजाति माना जाता है, क्योंकि इसकी आबादी में परिवर्तन स्थानीय जलवायु स्थितियों में परिवर्तन को दर्शाता है।

अद्वितीय विविधता: बालसम मुन्नार बालसम पौधों की एक अद्वितीय विविधता का घर है, अकेले एराविकुलम राष्ट्रीय उद्यान में इसकी 40 से अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं।

Face to Face Centres





<p>दादा साहेब फाल्के पुरस्कार</p> 	<p>हाल ही में केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने घोषणा की है कि दिग्गज बॉलीवुड अदाकारा वहीदा रहमान को 2021 का दादा साहेब फाल्के लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार दिया जाएगा।</p> <p>दादा साहेब फाल्के पुरस्कार क्या है?</p> <p>दादा साहेब फाल्के पुरस्कार सिनेमा के क्षेत्र में भारत का सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार है, जो भारतीय सिनेमा में असाधारण योगदान के लिए दिया जाता है।</p> <p>पुरस्कार: प्राप्तकर्ताओं को एक स्वर्ण कमल (गोल्डन लोटस) पदक, एक शॉल और ₹10 लाख का नकद पुरस्कार मिलता है।</p> <p>शुरुआत: यह पुरस्कार 1969 में स्थापित किया गया था और पहली बार देविका रानी को प्रदान किया गया था।</p> <p>दादा साहेब फाल्के: इस पुरस्कार का नाम धुंडीराज गोविंद फाल्के के नाम पर रखा गया है, जिन्हें व्यापक रूप से "भारतीय सिनेमा का जनक" माना जाता है। उन्होंने 1913 में भारत की पहली पूर्ण लंबाई वाली फीचर फिल्म (first full-length feature film), "राजा हरिश्चंद्र" का निर्देशन किया।</p> <p>उल्लेखनीय प्राप्तकर्ता: यह पुरस्कार भारतीय सिनेमा की दिग्गज हस्तियों को प्रदान किया गया है, जिनमें सत्यजीत रे, राज कपूर, दिलीप कुमार, अमिताभ बच्चन, रजनीकांत आदि शामिल हैं।</p>
<p>चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा</p> 	<p>चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे के बारे में:</p> <ul style="list-style-type: none"> चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा चीन के झिजियांग को पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह से जोड़ने वाला 3,000 किलोमीटर का बुनियादी ढांचा नेटवर्क है, जिसमें राजमार्ग, रेलवे और विकास परियोजनाएं शामिल हैं। यह पाकिस्तान और चीन के बीच एक द्विपक्षीय पहल है, जिसे राजमार्गों, रेलवे, पाइपलाइनों और विभिन्न बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के माध्यम से कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह चीन को हिंद महासागर के लिए एक छोटा व्यापार मार्ग प्रदान करता है, जो वैश्विक व्यापार गतिशीलता को प्रभावित करता है। यह 2013 में शुरू की गई चीन की महत्वाकांक्षी बेल्ट एंड रोड पहल का एक घटक है, जिसका उद्देश्य भूमि और समुद्री मार्गों का एक वैश्विक नेटवर्क बनाना है। भारत CPEC का विरोध करता है क्योंकि इसका मार्ग पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (PoK) से होकर गुजरता है, जिससे भारत की संप्रभुता और क्षेत्रीय स्थिरता संबंधी चिंताएँ बढ़ जाती हैं। यह हिंद महासागर में अपनी उपस्थिति का विस्तार करते हुए चीन की "स्ट्रिंग ऑफ पर्सल्स" रणनीति के अनुरूप है।
<p>इसरो का आदित्य-एल1 मिशन</p> 	<p>आदित्य-एल1 मिशन के बारे में:</p> <ul style="list-style-type: none"> भारत का पहला सूर्य-केंद्रित मिशन, आदित्य-एल1 अंतरिक्ष यान, सूर्य का अध्ययन करने के लिए इसरो द्वारा 2 सितंबर को लॉन्च किया गया था। आदित्य-एल1 ने 18 सितंबर को सन-अर्थ लैंग्वेज प्वाइंट 1 (एल1) की ओर अपनी यात्रा शुरू की, जनवरी 2024 तक एल1 पर पहुंचने की उम्मीद है। <p>L1 के चारों ओर हेलेो कक्षा: आदित्य-L1 सूर्य-पृथ्वी L1 बिंदु के चारों ओर एक प्रभामंडल कक्षा में संचालित होगा।</p> <p>हेलेो ऑर्बिट्स व्याख्या :</p> <ul style="list-style-type: none"> हेलेो कक्षाएँ लैंग्वेज बिंदु (L1, L2 या L3) के चारों ओर त्रि-आयामी कक्षाएँ हैं। इनमें प्राथमिक खगोलीय पिंडों के सापेक्ष एक आउट-ऑफ-प्लेन गति घटक शामिल है। <p>L1 पर परिचालन अंतरिक्ष यान: वर्तमान में, लैंग्वेज पॉइंट 1 (L1) पर चार परिचालन (operational) अंतरिक्ष यान स्थित हैं: पवन, सौर और हेलिओस्फेरिक वेधशाला (SOHO), उन्नत संरचना एक्सप्लोरर (ACE) और डीप स्पेस क्लाइमेट ऑब्ज़र्वेटरी (DISCOVER)।</p> <p>L1 पर अंतरिक्ष यान की भूमिका: L1 पर तैनात अंतरिक्ष यान प्रतिकूल अंतरिक्ष मौसम की घटनाओं के संबंध में महत्वपूर्ण प्रारंभिक चेतावनी प्रदान करते हैं।</p>
<p>पॉलीइथाइलीन टेरैफ्थैलेट (Polyethylene Terephthalate)</p> 	<p>पॉलीइथाइलीन टेरैफ्थैलेट (Polyethylene Terephthalate) क्या है?</p> <ul style="list-style-type: none"> पॉलीइथाइलीन टेरैफ्थैलेट (पीईटी) एक व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला थर्मोप्लास्टिक पॉलिमर है। यह पॉलिएस्टर परिवार से संबंधित है। <p>उत्पादन:</p> <ul style="list-style-type: none"> पीईटी का उत्पादन एथिलीन ग्लाइकॉल और टेरैफ्थैलिक एसिड को पोलिमेराइज करके किया जाता है। यह रासायनिक प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप पिघला हुआ, चिपचिपा द्रव्यमान बनता है जिसे फाइबर में संसाधित किया जा सकता है या बाद में प्लास्टिक के रूप में उपयोग के लिए ठोस बनाया जा सकता है। <p>गुण:</p> <ul style="list-style-type: none"> पीईटी अपनी प्राकृतिक अवस्था में अत्यधिक लचीला, रंगहीन और अर्ध-क्रिस्टलीय होता है। यह अच्छी आयामी स्थिरता, प्रभाव प्रतिरोध और नमी, अल्कोहल तथा सॉल्वेंट्स के प्रति प्रतिरोध प्रदर्शित करता है। यह एक उत्कृष्ट विद्युत इन्सुलेटर है। <p>अनुप्रयोग:</p> <ul style="list-style-type: none"> इसका व्यापक रूप से शीतल पेय, जूस और पानी सहित खाद्य पदार्थों और पेय पदार्थों की पैकेजिंग के लिए उपयोग किया जाता है। इसका उपयोग कपड़ा उद्योग में किया जाता है।





<p>समाचारों में स्थान</p> <p>काओबल गली-मुश्कोह घाटी</p>	<p>हाल ही में, काओबल गली-मुश्कोह घाटी (Kaobal Gali-Mushkoh Valley), जो पहले कारगिल युद्ध का युद्धक्षेत्र था, अब पर्यटकों के लिए सुलभ हो गई है।</p> <p>अवस्थिति:</p> <ul style="list-style-type: none"> काओबल गली-मुश्कोह घाटी भारत के जम्मू और कश्मीर में कारगिल के द्रास सेक्टर में स्थित है। इसने भारत और पाकिस्तान के बीच 1999 के कारगिल युद्ध के दौरान युद्धक्षेत्र के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। <p>भौगोलिक सुविधाएं:</p> <p>काओबल गली, गुरेज में 4,167 मीटर की ऊंचाई पर सबसे ऊंचा दर्रा है, जो गुरेज घाटी को मुश्कोह घाटी से जोड़ता है।</p> <p>वन्यजीव: यह विभिन्न प्रकार के वन्यजीवों का घर है, जिनमें आइबेक्स, कस्तूरी मृग, मर्मोट्स, हिमालयी भूरे भालू और हिम तेंदुए शामिल हैं।</p> <p>नदी: किशनगंगा</p>
<p>समाचार में व्यक्तित्व</p> <p>पंडित दीन दयाल उपाध्याय</p>	<p>पंडित दीनदयाल उपाध्याय (1916-1968)</p> <p>पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से जुड़े एक प्रमुख विचारक और भारतीय जनसंघ के सह-संस्थापकों में से एक थे।</p> <p>योगदान:</p> <p>1940 के दशक में, उन्होंने मासिक पत्रिका "राष्ट्र धर्म", साप्ताहिक पत्रिका "पांचजन्य" और दैनिक समाचार पत्र "स्वदेश" का प्रकाशन शुरू किया।</p> <p>उन्होंने कई किताबें लिखीं, जिनमें "सम्राट चंद्रगुप्त," "जगतगुरु शंकराचार्य," "अखंड भारत क्यों?" और "राष्ट्र चिंतन" शामिल हैं।</p> <p>उन्होंने एकात्म मानववाद का दर्शन विकसित किया,, जो अद्वैत वेदांत के गैर-द्वैतवादी दर्शन में निहित था।</p> <p>नैतिक मूल्य:</p> <p>पंडित दीन दयाल उपाध्याय को ईमानदारी, निष्पक्षता, परिश्रम और राष्ट्रवाद की गहरी भावना सहित नैतिक मूल्यों पर उनके दर्शन के लिए जाना जाता था।</p>



POINTS TO PONDER

- ❖ किस बैंक ने एमएसएमई के लिए एक विशिष्ट वन-स्टॉप ट्रांजेक्शन बैंकिंग प्लेटफॉर्म 'एनईओ फॉर बिजनेस' शुरू किया है? - एक्सिस बैंक
- ❖ दादा साहेब फाल्के लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड, 2023 से किसे सम्मानित किया गया है? - वहीदा रहमान
- ❖ भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) ने किस संक्रमण का पता लगाने के लिए ट्रूनेट परीक्षण (Truenat test) करने की मंजूरी दी है? - निपाह
- ❖ भारत ने भारतीय शहरों में 10,000 भारत-निर्मित इलेक्ट्रिक बसें तैनात करने के लिए किस देश के साथ साझेदारी की है? - यूएसए
- ❖ एक्स-रे इमेजिंग और स्पेक्ट्रोस्कोपी मिशन (XRISM) और स्मार्ट लैंडर फॉर इन्वेस्टिगेटिंग मून (SLIM) को किस देश द्वारा सफलतापूर्वक लॉन्च किया गया? - जापान

Face to Face Centres